अध्याय द्वितीय

साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

साहित्य का पुनरावलोकन

2.0 भूमिका

वस्तुत साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से पूर्व में किये गये अनुसंधानों के अध्ययसन से अन्य नवीन समयस्याओं का पता चलता है। अतः किसी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारुप का स्थान बनाने के लिए शोध कर्ता को पूर्व सिद्वांतों एवं शोधों से यह भलीभांति अवगत करता है। जिनसे समस्या का अर्थ, उसकी उपयुक्ता, समस्या से इसका संबंध और प्राप्त अध्यन से इनके अन्तरों को निर्धारित करता है।

वस्तुतः साहित्य का पुनरावलोकन पूर्व अध्ययनों की सीमाएं और महत्वपूर्ण चीजों के संदर्भ में अन्तः दृष्टि प्रदान करता है। यह उसको अपने शोध में सुधार करने के योग्य बनाता है।

2.2 पूर्व शोध आकलन

- **Bhushan, V (1992).** " Factor content of the minnesota teacher attitude inventory in Hindi."

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारत में शिक्षक-प्रशासकों की संतुष्टी के लिये मीनिसोरा शिक्षक अभिवृत्ति सूचि के प्रभाव का अध्ययन करना था।

इस अध्ययन के निष्कर्ष में कारक प्रथम, में 28 विषय पर दर्शाते हैं कि भारतीय शिक्षक बच्चों को कम स्वतंत्रता देते है। लेकिन उसी समय अधिकारों का उपयोग करते है।

कारक द्वितीय में 38 विषय यह दर्शाते हैं कि भारतीय शिक्षक विद्यार्थियों की रूचि के विपक्ष में रहते है।

- **Ganapathy. S (1992)** " Self concept of student teachers and their Attitude towards teaching profession."

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छात्राध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति का मापन तथा आत्म-प्रत्यय निर्धारित करना।

अध्ययन में तमिलनाडू के 9 शिक्षा-महाविद्यालय के 723 छात्राध्यापको को चयनित किया तथा डॉ.अहुलूवालिया की TAI एवं मुक्ता रानी रस्तोगी की आत्म प्रत्यय मापनी प्रयोग की गइ।

अध्यापन अभिवृत्ति में स्त्री व पुरूष छात्राध्यापको में अनुकुल पायी गयी और स्त्री व पुरूष छात्राध्यापकों में सकारात्मक आत्मप्रत्यय और अध्यापन अभिवृत्ति का सम्बन्ध पाया गया।

- **भमान (2004) ने** " केन्द्रीय प्रवृत्ति योजना के *अन्तर्गत गुजरात* के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्ययन" किया, इसके उद्देश्य थे। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अध्ययन करना। इस शोध प्रबंध में इनके निष्कर्ष इस प्रकार थे– जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा प्राथमिक शिक्षा से संबंधित सभी सैद्धांतिक तथा प्रयोगिक कार्यो का प्रशिक्षण दिया गया है।
- **ठाकरेः 1980 ने** "अहमदाबाद के 200 छात्राध्यापकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवुत्ति" का अध्ययन किया।

अध्ययन के पूर्व उन्होंने अभिवृत्ति वं उपलब्धि परीक्षण किये तथा अध्यापन के बाद भी उन्होंने अभिवृत्ति एवुं उपलब्धि परीक्षण किया। सारांश में उन्होंने पाया कि उपलब्धि अंकों में तो सार्थक विभेद है, परन्तु अभिवृत्ति अंको में विभेद सार्थक नहीं है।

- **Reddy. V.S. & Jyothi, M.N. (2002).** "Study of Attitude of teacher's trained through correspondence mode".

इस शोध का मुख्य उद्देश्य पत्राचार द्वारा प्रशिक्षित की अभिवृत्ति का अध्ययन करना। दुरस्थ शिक्षा के द्वारा बी.एड. के प्रशिक्षित अध्यापकों की अभिवृत्ति में लिंग भेद का अध्ययन करना। स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षकों को जो कि पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा प्रशिक्षित है और दुरस्थ शिक्षा

के द्वारा प्रशिक्षित प्रशिक्षकों अभिवृत्तियों में अंतर का अध्ययन ज्ञात करना।

सभी शिक्षकों बी.एड. के पत्राचार पाठ्यक्रम से सम्बंधित अभिवृत्ति की अनुकूलता को व्यक्त करते है।

D- 337

पुरूष और महिला शिक्षकों की अभिवृत्तों में अंतर पाया गया। जैसे कि महिला शिक्षकों में बी.एड. पत्राचार पाठ्यक्रम की और सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गयी जब की पुरूष शिक्षकों में उदासीन अभिवृत्ति पाई गयी।

- **पाण्डे, उषा (1988)** ने " महिला शिक्षक प्रशिक्षार्थी की शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन किया है।

निष्कर्ष से पता चलता है कि महिला शिक्षक को अध्यापन व्यवसाय में अधिक रूचि है। उनके लिये शिक्षण व्यवसाय एक स्वर्ण संधि होती हैं। क्योंकि दुसरा व्यवसाय जल्दी से नहीं मिल पाता इसीलिए महिला अध्यापकों को शिक्षण अध्यापन व्यवसाय में अधिक रूचि है।

- **बुद्धिसागर, मीना और सन सनवाल, डी.एन. 1991** ने "बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों पर अध्ययन किया है। शिक्षण व्यवसाय के प्रति व्यवहार, बुद्धि, अभिवृतित का असर एवं उपलब्धि पर अनेक अंतर संबधी का अध्ययन किया है। निष्कर्ष से पता लगता है कि प्रशिक्षणार्थियों की

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

उपलब्धि पर उनकी अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पडा जबकि बुद्धि का उपलब्धि पर प्रभाव दिखाई देता है।

- **शर्मा (2005–06)**

इन्होंने "शिक्षक–प्रशिक्षण का कक्षागत प्रक्रिया पर प्रभाव" के विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य छात्रों को उपलब्धि की जानकारी प्राप्त कर कठिन बिन्दु चिन्हित कर शैक्षिक प्रक्रिया में गति प्रदान करना है। प्राप्त अवरोधक तत्वों के आधार पर शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आंशिक संशोधन करना है। अध्ययन का निष्कर्ष में अवरोधों को समाप्त करने हेतु शासन से अनुरोध किया जायेंगा तथा शिक्षक प्रशिक्षणों में अवरोधों पर परिचर्चा की जाने हेतु अनुशंसा की जायेंगी।